जिनागमों की मूल भाषा (फोल्डर नं. 1060)

मुख्य टाईटल

प्रकाशकीय

संपादकीय

दो शब्द

अनुक्रमणिका

Fxcerpts from Messages and Opinions

भूमिका

Introduction

विषय प्रतिष्ठापन

खण्ड – 1 Section - 1

A Few Observations on the History and Development of MIA. Languages and Dialects. H.C. Bhayani 73

Jaina Agama Texts and Their Problems in Editing. S.R.Banerjee 78

The Myth of "Prakrtih Samskrtam" R.P.Poddar 84

Place of Ardhamagadhi and Suraseni Languages of Jain Canonical Works in the Evolution of MIA. Languages. K.R.Chandra 89

A Glimpse of Some of the Archaic Lingustic Traits Inherited by Agamic Ardhamagadhi From Vedic Chandas Speech. N.M.Kansara 115

Old Linguistic Elements in the Ardhamagadhi Language in Comparision to Sauraseni. D.N.Sharma 119

खण्ड – 2 Section - 2

जैन आगमों की मूल भाषा अर्धमागधी या शौरसेनी. सागरमल जैन 127

पुरातत्त्व और इतिहास के परिप्रेक्ष्य में शौरसेनी भाषा की प्राचीनता. मधुसूदन ढांकी 159

आगमसूत्रों की वर्तमान भाषा. समणी चिन्मयप्रज्ञा 161

शौरसेनी प्राकृत में प्राचीन भाषा-तत्त्व खारवेल के प्राचीन (ई. सन् पूर्व द्वितीय-प्रथम शताब्दी) काल के शिलालेख की भाषा के साथ. प्रेम सुमन जैन 169

अर्धमागधी प्राकृत की तुलना. शोभना आर. शाह 186

तीर्थंकरों की उपदेश-भाषा. जितेन्द्र बी. शाह 194

મૌર્ય સમ્રાટ્ અશોકના અભિલેખોની ભાષા સાથે અર્ધમાગધી પ્રાકૃતનું સાદૃશ્ય. ભારતી શેલત 199

પરિશિષ્ટ Appendix

"प्राकृत विद्या" में प्रो. टाँटियाजी के नाम से प्रकाशित उनके व्याख्यान के विचार बिन्दुओं की समीक्षा. सागरमल जैन 209

शौरसेनी प्राकृत के सम्बन्ध में प्रो. भोलाशंकर व्यास की स्थापनाओं की समीक्षा. सागरमल जैन 223

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org